१६ - एक नया आरम्भ

1

आप फिर से आरम्भ कर सकते हैं

2

(दृश्य)

मार्च १९१२ में, एक मसीही प्रचारक ने मास्को के क्रेमलिन सभागृह में कई धर्म सभाएँ की। एक सभा के बाद वे अपने छोटे से दफ्तर में बैठे थे कि उनका दरवाजा अचानक खुला।

१६ - एक नया आरम्भ

3

और एक उलझी दाढ़ी वाला हट्ठा - कट्ठा नवयुवक कमरे में घुस आया। यह सोचकर कि वह उस पर आक्रमण करने वाला है, प्रचारक पीछे हट गया। अनुवादक ने समझाया कि यह आदमी मास्को का बदनाम अपराधी था। वह अट्ठाईस बार जेल जा चुका था। अपने अपराधों के बोझ से दबा, और भविष्य के प्रति निराश, वह शान्ति की खोज में था। प्रचारक ने शान्त भाव से १ यूहन्ना १ : ९ पढ़ा :"यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्व करने में विश्वास योग्य और धर्मी है।"उसने अशांत व्यक्ति को कूस पर चढ़ाये गये चोर की कहानी सुनाई जिसे क्षमा प्राप्त हुई। उसने उसे विश्वास दिलाया, "यीशु आज भी वही उद्वारकर्ा है।" वह क्षमा प्रदान करता है। वह छुटकारा दिलाता है। वह उद्वार दिलाता है। ले लो ! आनिन्दत रहो। परमेश्वर की महिमा करो। उस नवयुवक की आँखों से आँसू गिरने लगे। उसने घूटने टेके और परमेश्वर से क्षमा प्राप्त की।

१६ - एक नया आरम्भ

4

एक वर्ष बाद प्रचारक मास्को आया। नयी बनी कलीसिया के विश्वासियों के साथ वह परमेश्वर की महिमा कर रहा था जब उसने उस नवधर्मी अपराधी को गाने वालों के दल में देखा।

5

उस पुराने -अपराधी के चेहरे से नयी शान्ति झलक रही थी। यीशु को स्वीकार करने के कारण उसका चेहरा खुशी से चमक रहा था। बाइबिल की शिक्षा ने उसके जीवन को बदल डाला था और बाइबिल के उसने अनुसार बपतिस्मा ले लिया था। बाइबिल के अनुसार बपतिस्मा परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा जीवन में परिवर्तन आने का प्रतीक है। बपतिस्मा यीशु मसीह में नये जीवन का साक्षी है। शाऊल की कहानी, जो बाद में पौलुस प्रेरित बन गया, यीशु द्वारा जीवन में लाए परिवर्तन का एक शक्तिशाली उदाहरण है।

6

शाऊल जन्म से रोमी नागरिक था और उसने यरूशलेम के अच्छे शिक्षकों द्वारा शिक्षा पायी थी। शाऊल यहूदी धर्म के लिये उत्साही था और अपने विश्वास की रक्षा के लिये पहचाना जाता था।

१६ - एक नया आरम्भ

7

शाऊल के धर्म-परिवर्तन के बाद उसका नाम पौलुस हो गया-वह खुद विवरण देता हैं कि उसने मसीही लोगों को खत्म करने के लिये क्या किया।

8

(मूलपाठ : प्रेरितों का काम २२ : ४, ५)

"मैंने .....पुरूष और स्त्री दोनों को बांध -बांधकर और बन्दीगृह में डाल -डालकर, इस पंथ को यहाँ तक सताया कि उन्हें मरवा भी डाला.....

9

और दमिश्क को चला जा रहा था, कि जो वहाँ हों उन्हें भी दण्ड दिलाने के लिये बांधकर यरूशलेम में लाऊँ।"

प्रेरितों का काम २२ : ४, ५

10

जब वह चलते-चलते दमिश्क के निकट पहुँचा, तो एकाएक एक बड़ी ज्योति आकाश से उसके चारों ओर चमकी और वह भूमि पर गिर पड़ा।

11

(मूलपाठ : प्रेरितों का काम २२ : ७, ८)

"यह शब्द सुना, कि, "..हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?"

12

और मैंने उत्तर दिया, "हे प्रभु तू कौन है?" और उसने उत्तर दिया

१६ - एक नया आरम्भ

13

"मैं यीशु नासरी हूँ, जिसे तू सताता है।"
प्रेरितों का काम २२ : ७, ८

14

(मूलपाठ : प्रेरितों का काम २२ : १०)
घमण्डी फरीसी ने नम्रता से परमेश्वर से कहा, ".... हे प्रभु मैं क्या कँरू? प्रभु ने मुझ से कहा ..... उठकर दमिश्क में जा,

15

और जो कुछ तेरे करने के लिये ठहराया गया है वहाँ तुझ से सब कह दिया जाएगा।"
प्रेरितों का काम २२ : १०

16

शाऊल तेज ज्योति के कारण अन्धा हो गया था और दमिश्क के एक घर में उसे पकड़ कर लाया गया।

१६ - एक नया आरम्भ

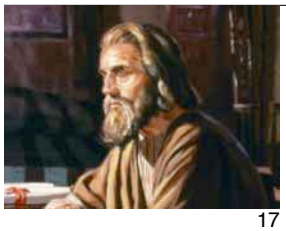
17

तीन दिन तक शाऊल के पास परमेश्वर के लोगों के लिये सोचने का समय था जिनको उसने सताया और दर्द दिया था। कितनी बार उसने घोषणा की थी कि यीशु उद्धारकर्ता नहीं था और उसके अनुयायी भ्रमित कट्टरपंथी थे। परमेश्वर के लोगों पर दोष लगाते तथा उनके विरूद्व झूठी गवाही देते हुए उसने जगत के उद्धारकर्ता के विरूद्व गवाही दी थी! शाऊल के हृदय को किस दु:ख ने महसूस करवाया होगा। शाऊल के पास यही सही समय था कि वह अपने परमेश्वर से सबकुछ ठीक कर सकता था।

18

वह तीन दिन तक पूरे अंधकार में बैठा रहा और तब परमेश्वर ने हनन्याह नाम एक भक़्त को उसके पास भेजा।

तब हनन्याह ने शाऊल से कहा,

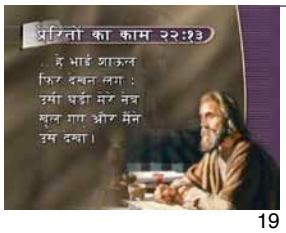

19

(मूलपाठ : प्रेरितों का काम २२ : १३ - १५)

"...हे भाई शाऊल फिर देखने लग : उसी घड़ी मेरे नेत्र खुल गए और मैंने उसे देखा।"

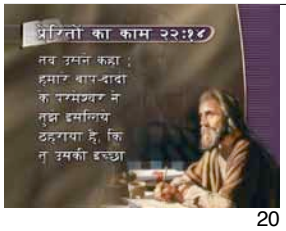

20

तब उसने कहा, "हमारे बाप-दादों के परमेश्वर ने तुझे इसलिये ठहराया है, कि तू उसकी इच्छा को जाने,

१६ - एक नया आरम्भ

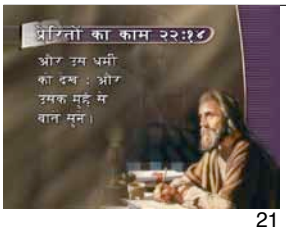

21

और उस धर्मी को देख : और उसके मुहँ से बातें सुने।

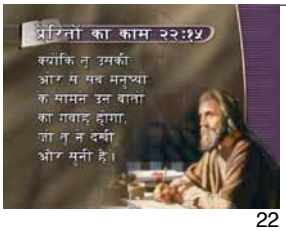

22

"क्योंकि तू उसकी ओर से सब मनुष्यों के सामने उन बातों का गवाह होगा, जो तू ने देखी और सुनी है।"
प्रेरितों का काम २२ : १३ - १५

तब, शाऊल को आज्ञा मिली कि वह अपने जीवन में आगे बढ़ और बीती हुई बातों को बन्द कर दे,

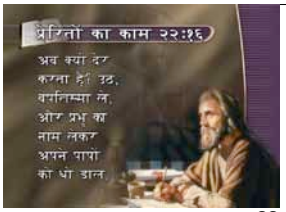

23

(मूलपाठ : प्रेरितों का काम २२ : १६)
हनन्याह ने शाऊल से कहा, "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल,

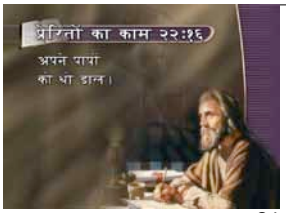

24

अपने पापों को धो डाल।"
प्रेरितों का काम २२ : १६

25

इस प्रकार से शाऊल अपने परमेश्वर से हमेशा के लिये जुड़ गया। शाऊल के नये जीवन के लिये बपतिस्मा एक दरवाजा था। धर्म के नाम पर शाऊल ने जो घृणित कार्य किये थे उनसे उसको छुटकारा पाना था। उसे शुद्व होना था। वह जानता था कि उसे परमेश्वर की महिमा और क्षमा की आवश्यकता है।

१६ - एक नया आरम्भ

26

जब उसका बपतिस्मा हुआ, तब वह जानता था कि परमेश्वर ने उसे क्षमा कर दिया है। सताने वाला शाऊल पौलुस बन गया और यीशु के लिये जीवनपर्यन्त अति उत्साही रहा!

27

क्या आपने कभी यह सोचा है कि आप फिर से नया जीवन आरम्भ कर सकते हैं और जितनी भी गलतियाँ बीते-दिनों में की हैं वे सभी धुल जाएंगी?

28

(दृश्य)

परमेश्वर जानता था कि हमलोगों को यही अनुभव चाहिये। इस कारण उसने बपतिस्मे को चिन्ह के रूप में स्थापित किया जिससे हमलोग उस समय से उसके साथ जुड़ जायें और यीशु में नया जीवन आरम्भ करें। पाप के लिये मृत्यु और नये जीवन के आरम्भ का बपतिस्मे से अच्छा और क्या चिन्ह हो सकता है - पानी के अन्दर नया जीवन पाना?

29

मसीही बपतिस्मा का आरम्भ यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला से होता है, एक भविष्यवक्ता जो मन - परिवर्तन पर प्रचार करता यहूदिया के बियाबान में प्रकट हुआ। यरदन नदी को जाते हुए सारे रास्ते यूहन्ना को सुनने जाते लोगों से भरे थे।

१६ - एक नया आरम्भ

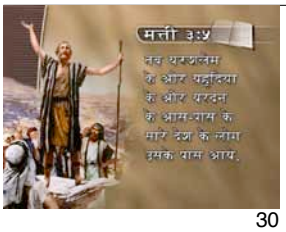

30

(मूलपाठ : मत्ती ३ : ५, ६)

बाइबिल कहती है, "तब यरूशलेम के और यहूदिया के और यरदन के आस-पास के सारे देश के लोग उसके पास आये,

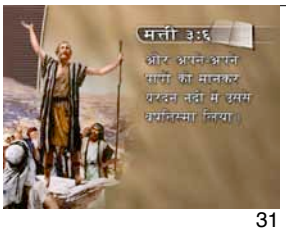

31

और अपने-अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उससे बपतिस्मा लिया।"

मत्ती ३ : ५, ६

32

अपनी बढ़ई की दुकान बंद करके और अपनी माँ को विदा कह कर यीशु भी यरदन नदी के रास्ते गये। जब यूहन्ना ने यीशु को दूर से आते देखा तब उसने उसे पहचान लिया और प्रचार करना बंद कर दिया।

33

(मूलपाठ : यूहन्ना १ : २९)

यीशु की ओर इशारा करते हुए, यूहन्ना ने कहा, "....देखो! यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है!"

यूहन्ना १ : २९

१६ - एक नया आरम्भ

34

यूहन्ना ने बलि के सच्चे मेम्ने को पहचान लिया था। जो भी उसके बलिदान को स्वीकार करे उन सभी के पापों के लिए वह मरने वाला था।

यूहन्ना हिचकिचा रहा था जब यीशु ने बपतिस्मा देने के लिए कहा।

35

(मूलपाठ : मत्ती ३ : १४)

उसने कहा, ".....मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है।"

मत्ती ३ : १४

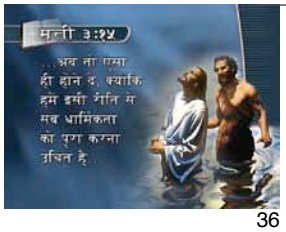

36

(मूलपाठ : मत्ती ३ : १५)

लेकिन यीशु ने दबाव डाला, ".....अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।"

पद १५

यूहन्ना जानता था की यीशु के पास पापों को स्वीकार करने के लिए कुछ नहीं है।

और यीशु को अपने जी उठने के विश्वास को दिखाने की आवश्यकता नहीं थीं।

१६ - एक नया आरम्भ

37

यीशु ने बपतिस्मा देने के लिये कहा ताकि वह मनुष्यों के साथ पहचाने जायें। वे चाहते थे कि हमारे सामने उदाहरण प्रस्तुत करे जिससे हम लोग उसका अनुसरण कर सकें। इस कारण यूहन्ना ने यीशु को यरदन नदी में डुबकी लगाई, यही बपतिस्मा का सही अर्थ है।

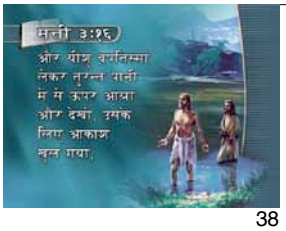

38

(मूलपाठ : मत्ती ३ : १६, १७)

बाइबिल कहती है, "और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया और देखो, उसके लिए आकाश खुल गया,

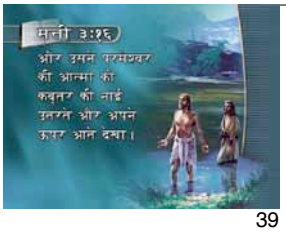

39

और उसने परमेश्वर की आत्मा को कबूतर की नाई उतरते और अपने ऊपर आते देखा।

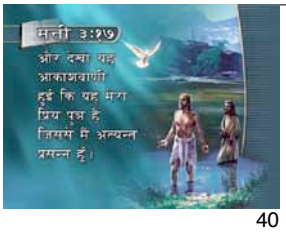

40

"और देखो यह आकाशवाणी हुई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।"

मत्ती ३ : १६, १७

कबूतर के पंखों पर परमेश्वर ने अपना प्रेम और प्रोत्साहन भरे शब्द यीशु को भेजे, और कुछ और भी किया।

१६ - एक नया आरम्भ

41

यीशु जैसे ही पानी से बाहर आये और गीले कपड़ों में यरदन नदी के किनारे खड़े हुए, परमेश्वर ने उन्हें अपना अभिषिक्त पुत्र कह कर परिचय कराया। यीशु का बपतिस्मा उसके सुसमाचार कार्य का आरम्भ था, पतरस ने ऐसा कहा,

42

(मूलपाठ : प्रेरितो का काम १० : ३८)

"....परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया:

43

वह भलाई करता और सबको जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।"

प्रेरितो का काम १० : ३८

यीशु ने स्वयं बपतिस्मा नहीं दिया, पर बाइबिल बताती है कि उसके चेलों ने बपतिस्मा दिया:

44

(मूलपाठ : यूहन्ना ४ : १,२)

"फरीसियों ने सुना कि यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बनाता और उन्हें बपतिस्मा देता है,

१६ - एक नया आरम्भ

45

"यधपि यीशु आप नहीं वरन उसके चेले बपतिस्मा देते थे।"

यूहन्ना ४ : १,२

और यीशु के स्वर्ग जाने से पहले दी गई अन्तिम आज्ञा पर ध्यान दें:

46

(मूलपाठ : मत्ती २८ : १९, २०)

"इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओं और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो:

47

उन्हें सब बाते जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ; और देखो मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ।"

मत्ती २८ : १९, २०

48

शायद आप सोच रहे होंगे कि यीशु को मानने वालों ने उसके स्वर्ग चले जाने के बाद किस
प्रकार का बपतिस्मा दिया होगा।
कोई सन्देह नहीं कि, उन्होंने यीशु के उदाहरण को माना, क्योंकि वे उसके शिष्य थे।

१६ - एक नया आरम्भ

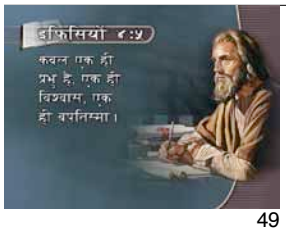

49

(मूलपाठ : इफिसियों ४ : ५)
पौलूस, जो यीशु का अत्यन्त उत्साही अनुयायी था, कहता है कि "केवल एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा।"
इफिसियों ४ : ५

50

कूस के बाद बपतिस्मा के बारे में प्रेरितों की पुस्तक में एक प्रचारक फिलिप्पुस के द्वारा दिए गए बपतिस्मे के बारे में लिखा है।

51

फिलिप्पुस गाजा के धूलभरे रास्ते पर अकेला चला जा रहा था, उसने खजांची को देखा, जो उसके खजाने का मालिक था। वह यरूशलेम उपासना करने आया था।

52

वह अपने रथ पर बैठा हुआ था और पुस्तक पढ़ता हुआ लौटा जा रहा था।
फिलिप्पुस उस आदमी के पास दौड़ा और पूछा

53

(मूलपाठ : प्रेरितों का काम ८ : ३०, ३१)
जो वह पढ़ रहा था क्या उसे वह समझता भी है।
खाजांची ने जल्दी से जवाब दिया,

54

"जब तक कोई मुझे न समझाए तो मैं क्योंकर समझूँ?"

१६ - एक नया आरम्भ

55

उसने फिलिप्पुस से विनती की कि वह उसके पास बैठे। फिलिप्पुस ने देखा और समझा कि यह आदमी यशायाह ५३ पढ़ रहा था उस आदमी ने फिलिप्पुस से विनती की कि वह उसे समझाये। वह पाठ यीशु का जीवन और उद्धारकर्त्ता के क्रूस पर चढ़ने के बारे में विस्तार से बताता है।

56

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम ८ : ३५)
बाइबिल बताती है, "तब फिलिप्पुस ने अपना मुँह खोला और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसने यीशु का सुसमाचार सुनाया।"
प्रेरितों के काम ८ : ३५

57

हिलती डुलती गाड़ी पर बैठ कर किस प्रकार से बाईबिल का अध्ययन किया होगा! फिलिप्पुस ने। उसने न केवल यीशु के बारे में बताया पर बपतिस्मा के महत्व को समझाया। बाईबिल बताती है कि जब वे एक तालाब के पास आये तो खजांची ने फिलिप्पुस से कहा,

१६ - एक नया आरम्भ

58

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम ८ : ३६)

".....देख यहाँ जल है अब मुझे बपतिस्मा लेने से क्या कठिनाई?"

प्रेरितों के काम ८ : ३६

59

फिलिप्पुस ने जवाब दिया, "यदि तू हृदय से चाहता है तो हो सकता है।"

60

खोजी ने कहा, "मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु मसीह ही परमेश्वर का पुत्र है।"

पद ३७।

61

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम ८ : ३८)

"तब उस ने रथ रोकने की आज्ञा दी और फिलिप्पुस और खोजा दोनों पानी में उतर पड़े। और उसने उसे बपतिस्मा दिया।"

प्रेरितों के काम ८ : ३८

फिलिप्पुस ने खजांची को पानी में डुबाया, जैसा कि यीशु के बपतिस्मा लेने के समय यूहन्ना ने उसे डुबाया था।

१६ - एक नया आरम्भ

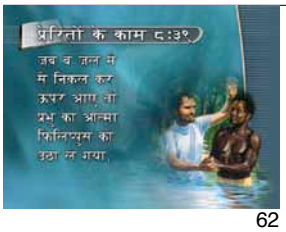

62

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम ८ : ३९)

"जब वे जल में से निकल कर ऊपर आए तो

प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया,

63

... और खोजा आनन्द करता हुआ अपने मार्ग को चला गया।।

प्रेरितों के काम ८ : ३९

64

यही होता है जब हम पाप से भरे पुराने जीवन को यीशु में नया जीवन आरम्भ करते हैं। स्पष्ट है कि पहले के मसीही डुबाकर ही बपतिस्मा स्वीकार करते थे।

65

सचमुच नये नियम में बपतिस्मा का और कोई तरीके का प्रमाण नहीं मिलता। फिलिप्पी में एक गिरजाघर की दीवार पर लगी तस्वीर में पहली शताब्दी के बपतिस्मे को दिखाया गया है। कलीसिया के इतिहासकारों और पुरातत्वेताओं के अनुसार पाया गया है।

66

बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी तक डुबाकर ही बपतिस्मा दिया जाता था।

१६ - एक नया आरम्भ

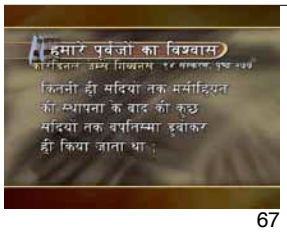

67

कारडिनल जेम्स गिब्बनस् ने लिखा है : "कितनी ही सदियों तक मसीहियत की स्थापना के बाद की कुछ सदियों तक बपतिस्मा डुबोकर ही किया जाता था;

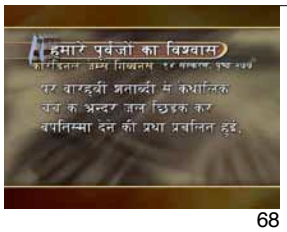

68

पर बारहवीं शताब्दी से केथोलिक चर्च के अन्दर जल छिड़क कर बपतिस्मा देने की प्रथा प्रचलित हुई,

69

क्योंकि डुबकी बपतिस्मा के बदले इस तरीके से कम असुविधा से बपतिस्मा दिया जा सकता है

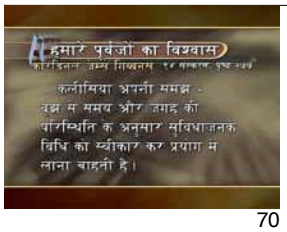

70

"..... कलीसिया अपनी समझ -बूझ से समय और जगह की परिस्थिति के अनुसार सुविधाजनक विधि को स्वीकार कर प्रयोग में लाना चाहती है।"

फेथ आव आवर फादर्स्,

१४ संस्करण पष्ठ २७७ ।

71

आज बहुत से पर्यटक सेन्ट जॉन की गिरजाघर को देखने जाते हैं, जो टर्की के खण्डहर शहर एफिसस में स्थित है। यह गिरजाघर शिष्य यूहन्ना के यादगार में बनवाया गया था। यहाँ विशेष है बपतिस्मा की हौदी जो आकार में गोल है और व्यास में बारह फीट और चार फीट गहरी है। पवित्र हौदी के दो तरफ नीचे को जाती सीढ़ियाँ है।

१६ - एक नया आरम्भ

72

बहुत से लोगों नै, इटली में, पीसा के मुख्य गिरजाघर के सामने पुरानी घण्टी मीनार के बारे में सुना है जो पीसा की झुकी हुई मीनार के नाम से साधारणत: जानी जाती है।

73

मुख्य गिरजाघर के और झुकी मीनार के साथ जो गोलाकार मंजिल है वह बपतिस्मा का कमरा है

74

चौदहवीं शताब्दी में इसकी हौदी बीस फीट व्यास में और चार फीट गहरी बनाई गई थी। यीशु के स्वर्ग जाने के तेरह सौ वर्ष बाद भी, बपतिस्मे का तरीका डुबाकर ही दिया जाना था!

75

यूरोप में ऐसे बारह से अधिक बपतिस्मा की पवित्र हौदियाँ मुख्य गिरजाघरों के साथ हैं छियासठ कलीसियाएँ इटली में पाई जाती हैं जिनको चार और चौदह शताब्दियों के बीच बनाया गया था।

76

लेकिन क्या बपतिस्मा का संस्कार इतना विशेष है?

77

क्या बपतिस्मा लेना इतना आवश्यक है?

१६ - एक नया आरम्भ

78

(मूलपाठ : यूहन्ना ३ : ५)
"यीशु ने उत्तर दिया कि मैं तुझ से सच कहता हूँ जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो,

79

वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।"
यूहन्ना ३ : ५

80

यीशु यहाँ सुझाव देते हैं कि पानी से जन्म लेना - डुबकी का बपतिस्मा जैसा हम बाद में देखेंगे - स्वर्ग में जाने के लिये आवश्यक है।

81

यीशु ने यह कथन केवल एक बार नहीं कहा। ध्यान दें कि वे यही बात फिर कहता है मरकुस १६ : १६ में :

82

(मूलपाठ : मरकुस १६ : १६)" जो विश्वास करें कि बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा....."मरकुस १६ : १६
पहला कदम बाइबिल बपतिस्मा की तैयारी में - विश्वास करें कि यीशु मसीह आपके पापों के लिए मरे और हमारा उद्धारकर्त्ता परमेश्वर है।

१६ - एक नया आरम्भ

83

खोजे से बात करते हुए फिलिप्पुस ने मसीह पर पूर्ण विश्वास की आवश्यकता पर जोर दिया। जब खोजे ने यह पूछा कि क्या उसका बपतिस्मा हो सकता है तब फिलिप्पुस ने कहा,

84

(मूलपाठ : प्रेरितो का काम ८ : ३७)

"यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है।"

प्रेरितो का काम ८ : ३७

85

(मूलपाठ : मत्ती २८ : १९)

यीशु ने अपने शिष्यों को दूसरा उपाय दिया,

"जाकर.....और सब जातियों के लोगों को सिखाओ और उन्हें बपतिस्मा दो।"

मत्ती २८ : १९

बपतिस्मा से पहले सिखाओ।

86

(मूलपाठ : मत्ती २८ : २०)

यीशु ने कहा कि बपतिस्मा के उम्मीदवार को सिखाया जाए "....उन्हें सब बातें जो मै ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ....."

मत्ती २८ : २०

१६ - एक नया आरम्भ

87

दूसरे शब्दों में, जो व्यक्ति बपतिस्मा के पवित्र विधि के लिए तैयारी कर रहा है, उसे यीशु की शिक्षा को समझना और स्वीकार करना है। लेकिन मात्र सिद्धान्तों को जानना काफी नहीं।

88

(मूलपाठ : मत्ती २८ : १९)

"इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो।"

मत्ती २८ : १९

हमें यीशु के लिए वचनबद्ध होना चाहिए। जब एक व्यक्ति यीशु से जुड़ जाता है तो साधारणतः वह यीशु की तरह जिंदगी आरम्भ करता है।

मसीह की इच्छा अपने जीवन से पूरी करता है।

वह ऐसा कुछ नहीं करता जो यीशु मसीह नहीं चाहते।

89

तीसरा कदम पश्चाताप है। पतरस ने कहा,

१६ - एक नया आरम्भ

90

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम ३ : १९)

"इसलिए मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाएं जाएं।"

प्रेरितों के काम ३ : १९

पश्चाताप का अर्थ एक जन के लिए पूरे मन से अपने पापों से पछताना और उनसे फिर जाना है।

91

यह केवल एक ऐसे हृदय से ही आ सकता है जो कलवरी तक पहुँचा हो - ऐसा हृदय जो हमारे पापों के लिए क्रूस के बलिदान से नरम किया गया हो।

92

आइये, बपतिस्मे तक के चरणों को संक्षिप्त में देखे;

93

१. बपतिस्मा से पहले व्यक्ति यीशु को उद्धारकर्त्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार करे।

94

२. बपतिस्मा से पहले व्यक्ति यीशु की शिक्षा को समझे और उनके पीछे चलने की इच्छा रखे।

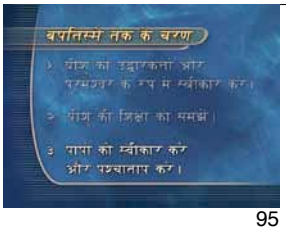

95

३. वह सभी पापों को स्वीकार करे और पश्चाताप करे।

१६ - एक नया आरम्भ

96

हो सकता है एक समय आपने सोचा हो कि आप अच्छाई के लिए अपने जीवन में परिवर्तन लाना चाहते हैं पर ऐसा कैसे हो यह आप नहीं जान पाए।

बपतिस्मा की तैयारी के समय इन तीनों चरणों को पार कर आप सचमुच नये व्यक्ति बन सकते हैं - अन्दर से बाहर तक। परमेश्वर की शक्ति से आप में नया जन्म और परिवर्तन हो सकता है और आप बदल सकते हैं।

97

कभी -कभी लोग पूछते हैं: "जब मैं बपतिस्मा लेता हूँ तो क्या कलीसिया का हिस्सा बन जाता हूँ? या यीशु में केवल बपतिस्मा लेता हूँ?" बाइबिल बताती है मसीह में बपतिस्मा लेना मसीह और कलीसिया का हिस्सा बनना है। बाइबिल बताती है पेन्टीकुस्त के दिन भीड़ ने बपतिस्मा लिया,

98

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम २ : ४१, ४२)

"सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया और उसी दिन तीन हजार मनुष्य के लगभग उन में से मिल गए।

99

और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने और सगंति रखने में

१६ - एक नया आरम्भ

100

"रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।"
प्रेरितों के काम २ : ४१, ४२
यह पद स्पष्ट लेते हैं। तब हम बपतिस्मा लेते हैं, हम लोग आत्मिक तौर से अनाथ नहीं हो जाते हैं। हमें अकेला नहीं छोड़ा जाता। प्रेरितों के समय में जिन लोगों ने बपतिस्मा लिया, वे "प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में लगे रहे।" वे परमेश्वर की बाईबिल पर विश्वास रखने वाली कलीसिया का अंग बन गए।

101

(मूलपाठ : १. कुरिन्थियों १२ : १३)
१. कुरिन्थियों १२ : १३ कहता है : "एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया....." पद २८ स्पष्ट करता है कि यह देह कलीसिया है। जब एक स्त्री और पुरूष यीशु को स्वीकार करते हैं और उसके पीछे चलने के लिये ठान लेते हैं तब वे चाहते हैं कि विश्वासीजन के अनुसार उपासना करें। उनका हृदय मसीह की आज्ञाओं का पालन करने वाली कलीसिया का हिस्सा बनने का निश्चय करता है।

१६ - एक नया आरम्भ

102

(मूलपाठ : मत्ती २८ : १९,२०)

इसलिए यीशु ने मत्ती २८ : १९,२० में कहा है -

"इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो,

103

उन्हें सब बातें जो मैने तुम्हें आज्ञा दी हैं मानना सिखाओ....."

104

आज रात यीशु आप से अनुरोध कर रहे हैं कि अपना जीवन उनको दे दें। वे अनुरोध कर रहे है कि आप उनके बाईबिल विश्वासी, आज्ञाकारी कलीसिया के सदस्य बन जायें; वे वही निमंत्रण आपको दे रहे हैं जो उन्होंने पौलुस प्रेरित को दिया था :

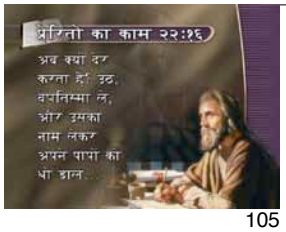

105

(मूलपाठ : प्रेरितो का काम २२ : १६)

"अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल...."

प्रेरितो का काम २२ : १६

१६ - एक नया आरम्भ

106

एक रात यहूदियों का सरदार जिसका नाम निकुदेमुस था यीशु के पास आया।

वह नहीं चाहता था कि उसके मित्र जाने कि वह यीशु को मानने का इच्छुक था।

107

(मूलपाठ : यूहन्ना ३ : २)

वह यह कहकर यीशु की चापलूसी करने लगा। कि तू परमेश्वर की ओर से गुरू होकर आया है "हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु हो कर आया है;

108

क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता।"

यूहन्ना ३ : २

यीशु उस व्यक्ति के हृदय को पढ़ सकते थे, इसलिए सही बात पर आये और नीकुदेमुस को दिखाया वह जो उसे चाहिए था।

109

(मूलपाठ : यूहन्ना ३ : ३)

"यीशु ने उसको उत्तर दिया; कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं,

१६ - एक नया आरम्भ

110

कि मैं तुझे से सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।"

यूहन्ना ३ : ३

111

(मूलपाठ : यूहन्ना ३ : ४)

नीकुदेमुस ने उससे कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता है?

112

क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?"

यूहन्ना ३ : ४

113

(मूलपाठ : यूहन्ना ३ : ५)

तब यीशु ने संकेत दिये कि वह आत्मिक रीति से दूसरे जन्म के बारे में बात कर रहे थे। तब उसने कहा;"कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे,

१६ - एक नया आरम्भ

114

तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।"
यूहन्ना ३ : ५
यहाँ यीशु आत्मिक जन्म के बारे में बात कर रहे थे जिसकी गवाही बपतिस्मा द्वारा होगी। यहाँ इस बात का संकेत है कि बपतिस्मा से व्यक्ति पानी में धुल जाता है।

115

इसमें सन्देह नहीं कि नीकुदेमुस, एक घमण्ड़ी फरीसी, अपने सच्चे यहूदी होने के बल पर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना चाहता था।

116

किसी भी तरीके से, पर यीशु ने स्पष्ट किया कि पवित्र आत्मा की शक्ति से जीवन का पूरी तरह बदल जाने के अलावा जैसा बपतिस्मा द्वारा दिखाया जाये, और कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

117

इस तरीके से व्यक्ति पिता द्वारा दिए गए और पुत्र द्वारा पूरा किए गए बलिदान को स्वीकार करने पर मुहर लगाता है।

118

यह मसीह में नए जीवन की आरम्भ है।

१६ - एक नया आरम्भ

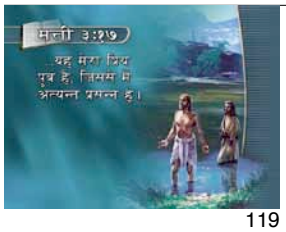

119

(मूलपाठ : मत्ती ३ : १७)

मसीह के बपतिस्मा के समय परमेश्वर की आवाज सुनी गयी थी, जो कह रही थी, "..... यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।"

मत्ती ३ : १७

120

यह वह समय था, जब परमेश्वर की आत्मा ने कबूतर के रूप में यीशु का अभिषेक किया था, जिससे वह अभिषेक किया हुआ मसीह या उद्धारकर्त्ता बन जाए।

121

यह घटना यीशु मसीह की लोगों में पुरोहिताई की आरम्भ को दिखाता है।

इसी तरह, विश्वासी का बपतिस्मा उसके उद्धारकर्त्ता के रूप में मसीह के साथ नए जीवन की शुरूआत को दिखाता है।

यह घटना विश्वासी की आत्मगवाही को उसके बपतिस्मा द्वारा दिखाता है कि वह मसीह से जुड़ गया है, कि उसने मसीह को पहन लिया है।

122

(मूलपाठ : गलतियों ३ : २७)

गलतियों ३ : २७ कहता है,

"तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।"

१६ - एक नया आरम्भ

123

(दृश्य)

बपतिस्मा, उनके लिये जो मसीह को अपने बलिदान के लिये स्वीकार करते है, मसीह के बलिदान के तीन महान तथ्यों पर उसके विश्वास को दिखाता है।

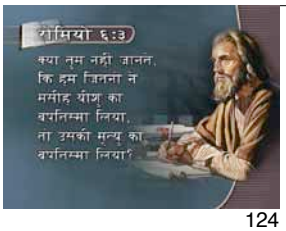

124

(मूलपाठ : रोमियो ६ : ३,४)

पौलुस कहता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया?"

रोमियो ६ : ३

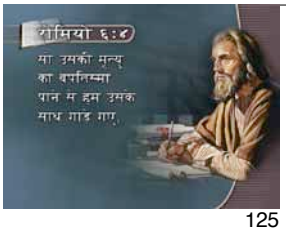

125

तब वह अगले चरण की ओर संकेत करता है जिसे मसीही को इस विधि में लेना है : सो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, पद ४ । लेकिन इस विश्वास के कार्य का एक तीसरा चरण है।

126

(मूलपाठ : रोमियो ६ : ४)

"ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया,

१६ - एक नया आरम्भ

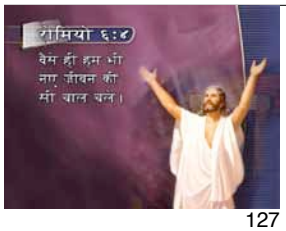

127

वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।"

पद - ४

यहाँ यह स्पष्ट हो जाता है कि जो व्यक्ति बपतिस्मा लेता है उसका नया जन्म पानी और आत्मा से होता है!

128

हमलोग आमतौर पर अपना विश्वास यीशु मसीह की मृत्यु पर, दफनाने पर, और जी उठने पर दिखाते हैं।

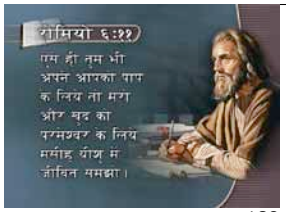

129

(मूलपाठ : रोमियो ६ : ११) पौलुस तब हमलोगों से कहता है, "ऐसे ही तुम भी अपने आपको पाप के लिये तो मरा परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो। "अब आप देख सकते हैं क्यों यह मसीही जिन्दगी का एक बहुत ही सुन्दर भाग है?

130

यह सगाई किए हुए जोड़े के लिए विवाह विधि के समान है। यह उनकी आम गवाही का मौका है कि जब तक जीवन रहेगा तब तक के लिए वे एक साथ जुड़ गये हैं।

१६ - एक नया आरम्भ

131

(मूलपाठ : इफिसियो ४ : ५)

बाइबिल बताती है कि वहाँ "एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास है, एक ही बपतिस्मा।"

इफिसियो ४ : ५

फिर भी कलीसिया में ऐसा लगता है कि बपतिस्मा के कई तरीके प्रयोग में लाये जाते हैं।

132

कुछ छिड़कते हैं, कुछ डालते हैं, और कुछ डुबोतें हैं। कैसे एक बपतिस्मा हो सकता है, जबकि सही तरीके पर लोगों में विवाद है?

133

हमें केवल इतना पूछने की आवश्यकता है कि, "यीशु ने क्या किया?"

134

हम लोग पाते है कि बाइबिल कहती है, कि यूहन्ना यरदन नदी में बपतिस्मा दे रहा था।

जब यीशु को बपतिस्मा दिया गया, वह "पानी से बाहर आया।"

उसे डुबोकर बपतिस्मा दिया गया।

१६ - एक नया आरम्भ

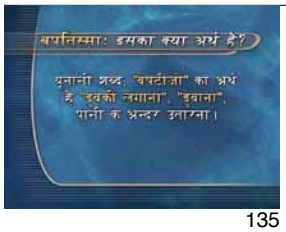

135

वास्तव में, युनानी शब्द बेपटीजो का यही अर्थ है। वही इसका भी है। डुबकी लगाना, डुबाना या पानी से ऊपर तक ढ़क देना। यही एक तरीका है बपतिस्मा का जो मसीह की मृत्यु, दफनाना और जी उठने को दर्शाता है।

136

एक समय पौलुस और उसके साथी सीलास मकिदुनिया के एक आदमी के निमंत्रण पर फिलिप्पी शहर पहुँचे, जिसे पौलुस ने स्वप्न में देखा था।

137

उनके प्रचार के द्वारा, पौलुस और सिलास ने फिलिप्पी लोगों के अन्दर प्राण डाल दिए।

138

यहाँ तक कि भीड़ ने उन पर चढ़ाई कर दी और उन का जीवन खतरे में पड़ गया। भीड़ ने उन दोंनो के कपड़े फाड़ दिये और अधिकारियों ने उन्हें मारने की आज्ञा दी।

139

उनको बन्दीगृह में डाला गया, और जेलर से कहा गया कि उनको कठोर कारावास में रखें कि वे बचकर भागने न पाएं।

१६ - एक नया आरम्भ

140

आधी रात को, पौलुस और सीलास गा और प्रार्थना कर रहे थे, तब अचानक भुईड़ोल आया और बन्दीगृह की दीवारें हिल गई - उसी समय बन्दीगृह का दरवाजा खुल गया और सबके बन्धन खुल गये। रखवाला भाग कर आया, और, दरवाजा खुला देखकर सोचा सभी बन्धुए भाग गये होंगे।

141

उसने तलवार खींचकर अपने आप को मार डालना चाहा क्योंकि यह निश्चित था कि कैदियों को जाने देने पर उसे मृत्युदण्ड मिलेगा।

142

(मूलपाठ : प्रेरितों का काम १६ : २८)
परन्तु पौलुस ने ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा; अपने आप को कुछ हानि न पहुंचा, क्योंकि हम सब यहां है।"
प्रेरितों का काम १६ : २८

१६ - एक नया आरम्भ

143

बेचारा जेलर विस्मय में पड़ गया था! ये लोग पौलुस और सीलास जेलर के हाथो दुःख सह रहे थे, फिर भी उन्होने किसी प्रकार की नाराजगी नहीं दर्शायी और न उनमें बदले की भावना ही थी।

जेलर जानता था कि ये लोग बेगुनाह हैं। वह दौड़कर बत्ती ले आया, उनकी कोठरी के अन्दर गया और उनके पैरो पर गिरा और माफी मांगने लगा।

144

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १६ : ३०, ३१)

"और उन्हें बाहर लाकर कहा, हे साहिबो, उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूं?"

145

इस प्रकार परमेश्वर के दो लोगों ने उत्तर दिया, "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।"

146

जेलर पौलुस और सीलास को अपने घर ले गया और उनके पैर और पीठ के घावों को धोया।

147

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १६ : ३३)

"और रात को उसी घड़ी उसने उन्हें ले जाकर उनके घाव धोए।

१६ - एक नया आरम्भ

148

और उसने अपने सब घराने समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया।"

प्रेरितों के काम १६ : ३३

149

मित्रों, यदि आप पहले बपतिस्मा का अर्थ और विशेषता नहीं समझे या आपको डुबकी बपतिस्मे द्वारा यीशु के अनुसरण का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ है तो वही प्रश्न और निमंत्रण आपके पास भी आता है जो हनन्याह ने शाऊल से पूछा :

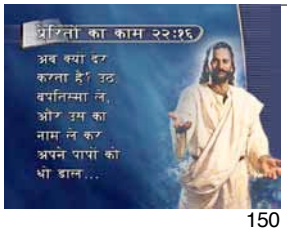

150

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम २२ : १६)

"और अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उस का नाम ले कर अपने पापों को धो डाला....."

प्रेरितों के काम २२ : १६

१६ - एक नया आरम्भ

151

जब यीशु का बपतिस्मा हुआ था, तब आकाश से एक आवाज आयी जो कह रही थी, "यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।" जब आप भी बपतिस्मा लेते हैं तो परमेश्वर आपके हृदय से भी बात करता है कि आप मेरे प्रिय पुत्र हैं, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ जब आप भी बपतिस्मे के लिए पानी के अन्दर जाते है, परमेश्वर अपने हृदय से बात करता है कि आप मेरे प्रिय पुत्र है। मैं आपसे अति प्रसन्न हूँ। जीवन की सबसे बड़ी खुशी इसी में है कि आप परमेश्वर को प्रसन्न रखें।

जब आप बपतिस्मा लेते हैं तब आपके पास अच्छी समझ से पूर्ण परमेश्वर की शक्ति होगी है। आप परमेश्वर के पुत्र है। बपतिस्मा को विवाह के समान माना गया है। विवाह से पहले दुल्हा और दुल्हन प्रेम में पड़ते हैं। विवाह पुरूष के हृदय में स्त्री व स्त्री के हृदय में पुरूष के लिए प्रेम उत्पन्न नहीं करता है। विवाह उस प्रेम का प्रमाण है। विवाह परिवार और मित्रों के बीच एक सार्वजनिक वचनबद्धता है। बपतिस्मा भी इसी तरह का ही है। बपतिस्मा परमेश्वर के लिए हमारे हृदय में प्रेम उत्पन्न नहीं करता है। बपतिस्म लेने का मुख्य कारण यह है कि हम पहले से ही उन्हें प्रेम

करते हैं।

बपतिस्मा - परिवार, मित्रों और कलीसिया के सामने एक वचनबद्धता है कि हम लोग उस पर विश्वास करते हैं। जब हम यह सार्वजनिक वचनबद्धता करते हैं, हमारा भूतकाल सांकेतिक रूप से बपतिस्मा के द्वारा प्रतीक के रूप में पानी में दफना दिया जाता है और मसीह में नयी जिंदगी जीने के लिए उठता है। भूतकाल समाप्त हो चुका है - दफन हुआ - फिर से हमें याद नहीं आएगा। परमेश्वर वचन देते है कि वह हमें पवित्र आत्मा देगें जिससे हम मसीह जीवन बिता सकें। कुछ लोग हिचकिचाते हैं। वे रोके रखते हैं। वे विश्वास नहीं करते कि वे तैयार हैं। बपतिस्मा का अर्थ यह नहीं है कि आप पूर्ण हैं। इसका अर्थ है कि आप वचनबद्ध हैं।

यीशु आपसे अनुरोध कर रहे हैं कि पानी में दफन बपतिस्मा को उसके पदचिन्ह समझकर अपनाएं। वे आप को आपके दोषों से आजादी देगें और पवित्र आत्मा के द्वारा नई जिंदगी जीने के लिए ताकत देते है।

क्या आप अब यीशु को हाँ कहेंगे? बाइबिल बपतिस्मा के द्वारा यीशु के पीछे चलना चाहेंगे, सभा ग्रह के

१६ - एक नया आरम्भ

सामने आ जाएं जिससे आपके लिए खास प्रार्थना हो सके।

मैं आप सभी को प्रार्थना के लिए खड़े होने का निमंत्रण देता हूँ। इससे पहले कि मैं प्रार्थना

करूं, अगर आप यह कहना चाहते हैं कि, हाँ, प्रभु, मैं बपतिस्मा लेना चाहता हूँ," बीच में से चलकर आए और अपना सिर झुकाकर खड़े हो जाएं जिससे मैं आपके लिए प्रार्थना कर सकूं। हिचकिचाए नहीं .. आए ...इसी समय आए, जिससे मैं आपके लिए प्रार्थना कर सकूं। आप परमेश्वर के पुत्र है। बपतिस्मा को विवाह के समान माना गया है। विवाह से पहले दुल्हा और दुल्हन प्रेम में पड़ते हैं। विवाह पुरूष के हृदय में स्त्री व स्त्री के हृदय में पुरूष के लिए प्रेम उत्पन्न नहीं करता है।

विवाह उस प्रेम का प्रमाण है। विवाह परिवार और मित्रों के बीच एक सार्वजनिक वचनबद्वता है। बपतिस्मा भी इसी तरह का ही है। बपतिस्मा परमेश्वर के लिए हमारे हृदय में प्रेम उत्पन्न नहीं करता है। बपतिस्म लेने का मुख्य कारण यह है कि हम पहले से ही उन्हें प्रेम करते हैं।

बपतिस्मा - परिवार, मित्रों और कलीसिया के सामने

१६ - एक नया आरम्भ

एक वचनबद्धता है कि हम लोग उस पर विश्वास करते हैं। जब हम यह सार्वजनिक वचनबद्धता करते हैं, हमारा भूतकाल सांकेतिक रूप से बपतिस्मा के द्वारा प्रतीक के रूप में पानी में दफना दिया जाता है और मसीह में नयी जिंदगी जीने के लिए उठता है। भूतकाल समाप्त हो चुका है - दफन हुआ - फिर से हमें याद नहीं आएगा। परमेश्वर वचन देते है कि वह हमें पवित्र आत्मा देगें जिससे हम मसीह जीवन बिता सकें।

कुछ लोग हिचकिचाते हैं। वे रोके रखते हैं। वे विश्वास नहीं करते कि वे तैयार हैं। बपतिस्मा का अर्थ यह नहीं है कि आप पूर्ण हैं। इसका अर्थ है कि आप वचनबद्ध हैं।

यीशु आपसे अनुरोध कर रहे हैं कि पानी में दफन बपतिस्मा को उसके पदचिन्ह समझकर अपनाएं। वे आप को आपके दोषों से आजादी देगें